<u>नागरिक उद्देश्य पत्र</u>

राजस्थान नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षा विभाग, जयपुर

नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षा के निर्माण का आधार और इसकी परिकूल्पना का परिप्रेक्ष्य –

1. नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षा विभाग एव स्वयंसेवी संगठन है।
2. शान्तिकाल में इस विभाग के स्वयं सेवक पुलिस के साथ कानुन व्यवस्था अनाये रखने में एवं युद्धकालीन परिस्थितियों में से स्वयं सेवक सूना के साथ मिलकर देश की सीमाओं की रक्षा करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में एवं अी.आई.पी. के आगमन के समय फायर ब्रिगेड की सेवाओं को सही विभाग उपलब्ध कराता है।
4. प्राकृतिक विपदाओं के समय स्वयं सेवक निष्काम भाव से नागरिकों के प्राणों व सम्पत्ति की रक्षा करते है।
5. इस विभाग का मुख्य उद्देश्य जनता का मनोबल बनाये रखते हुए समाज व राष्ट्र में सभी नागरिकों को अपने कर्त्तवयों के निष्पादन की प्रेरणा देना है।

हमारी प्रतिबद्धताः– निष्काम सेवा का लक्ष्य लेकर प्रत्येक सेवक/स्वयं सेविका भारत की सुरक्षा एवं सीमाओं की अक्षुण्णता बनाये रखने हेतु अपनी सम्पूर्ण क्षमताबों व योग्यताओं को राष्ट्र हित में अर्पण करने को तत्पर रहे। प्राणी मात्र पर आने वाले संकट या अनजानी आपदा के समय स्वयं सेवी भाव से अग्रणी होकर संगठित सामर्थ्य और कौशल के साथ सहायता उपलबध करें व कराएं तथा संकट को कम करने में अपनी प्रभावी भुमिका का निर्वाह करें।

हमारे कर्त्तव्य व हमारी उपयोगिताः– भारत के संविधान के प्रति सच्ची निष्ठा रखते हुए संविधान के अनुच्छेद 51(क) में वर्णित समस्त मूलभूत कर्त्तव्यों का अपने कार्यख कर्म और जीवन में प्रदर्शन। जब स्वयं सेवक/सेविकाणं ड्यूटी पर बुलाए जाते हैं तो समाज व राष्ट्र के हित में जो भी कर्त्तव्य करने हैं उसे पूरा करने में वे अपनी समस्त क्षमताओं को अर्पित करेंगे। यही शासन व राज्य सरकार के लिए हमारी उपयोगिता है।

जब स्वयं सेवक अपने घर, अपने गॅाव में हो व उन्हें किसी विशेष कर्त्तव्य को सम्पन्न करने के लिए बुलाया गया हो उस समय मूलभूत कर्त्तव्यों का जन–जन में प्रचार करना, जन–जन को प्रेरित करना यही समाज व राष्ट्र के लिए हमारी उपयोगिता है। मूलभूत कर्त्तव्यों का क्रमवार वर्णन निम्न है–

1. संविधान का पालन करें और उसके आदर्शो, संस्थाओं, राष्ट्रगान का आदर करे।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलनों को प्ररित करने वाले उच्च आदर्शो को हृदय में संजोये रखे और दसका पालन करें।
3. भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करें और अक्षुण्ण बनाये रखें।
4. भारत की रक्षा करें और आव्हान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।

5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हा, एसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है।
6. हमारी सामासिक (Composite) संस्कृति को गौरवशाली परम्परा का महत्व समझें और उसका परिरक्षण करें।
7. प्रकृतिक पर्यावरण की, जिसके अर्न्तगत वन, झील, पदी और वन्य जीव भी हैं, रक्षा करें, उनका संवर्द्धन करें तथा प्राणि मात्र के प्रति दया भाव रखें।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्तन तथा सुधान की भवना का विकास करें।
9. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें।
10. व्यक्तिगत और सामुहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढने का सतत् प्रयास करें, जिससे राष्ट्र, निरन्तर और उपबब्धि की नई ऊंचाईयों को छू ले।

हमारी प्रेरणा का स्रोत– प्रेरणा का स्रोत है हमारे संगठन का नवीन गान। यह गान राजस्थान के महानिदेशक व कमाण्डेण्ट जनरल नागरिक सुरक्षा व गृह रक्षा द्वारा लिखा गया है और सारे राष्ट्र के लिए 6 मई 2000 को नागरिक सुरक्षा माविद्यालय नागपुर के प्रांगण में आयोजित भव्य समारोह में केन्द्रीय गृह मंत्री द्वारा इसको पूरे राष्ट्र में फैले हुए नागरिक सुरक्षा व गृह रक्षा संगठन के लिए विमोचन किया गया। अब माच्र पास्ट व इस विभाग के सभी समारोह में यह गान अधिकृत रूप से गाया जावेगा। विभाग की प्रेरणा का यह अजस स्रोत बना रहेगा। इसके प्रथम अंश क रचना निम्न है–

जन–जन का क्रन्दन मिटे।
संतप्त प्राणियों की पीडा के कुछ अंश घटे।।
है लक्ष्य यही पर मार्ग कठिन,
नागरिक सुरक्षा सेवक हम।
गृह रक्षा के प्रहरी हम।
गृह रक्षा के प्रहरी हम।।

स्वयं सेवक/स्वयं सेविकाओं में सेवा की उच्चतम भावना को इस गीत के माध्यम से जगाने की प्रेरणा दी गई है। यद्यिपि मार्ग कठिन है तथापि लक्ष्य तो संतप्त मानवता की सेवा का है व भारत के महान बनाने का है। इसमें व्यक्त भाव इस संगठन के ओज की वृद्धि करते रहेंगे व इसके स्वयं सेवक/सेविकाओं व अधिकारियों को अपने कर्त्तव्यको व कर्म को "निष्काम सेवा " की भावना से करने की प्रेरणा देते रहेंगे।

महानिदेशक, नागरिक सुरक्षा एवं
महासमादेष्टा, गृह रक्षा, राजस्थान,
जयपुर